International Journal of Applied Research 2018; 4(8): 236-237

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(8): 236-237
www.allresearchjournal.com
Received: 21-06-2018
Accepted: 16-07-2018

गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

'अग्निबान' उपन्यासक विश्लेषणात्मक अध्ययन

गीता कुमारी

सारांशः
मैंथिली साहित्यक प्रख्यात साहित्यकार जीवकान्त उच्च कोटिक कवि–कथाकार ओ उपन्यासकार छलाह। जीवकान्त समकालीन मैथिली काव्य परिदृश्यक एक प्रतिष्ठित कवि सेहो छलाह। अपन अनुभवसँ जीवनक जटिलसँ जटिल विषयकें सोझ ढँगसँ सहजतापूर्वक अपन काव्यक माध्यमे कहि दैत छथि। जीवकान्तमे सभसँ पैघ गुण रहनि जे ओ मैथिली साहित्यक लेल एकटा पैघ पीढ़ीक निर्माण कयलनि, जे एखन सर्वाधिक सक्रिय छथि। लिखब हिनक बय छनि। ई पत्र आ साहित्य दुनू एके रंग लिखैत छलाह। दुनूमे एके रंग तन्मयता रहैत छलनि। ओ तीसम बर्खमे मैथिली साहित्यमे प्रवेश कयलनि आ तेना ने जमिकऽ लिखलनि जे मुझाइत छल मेघ मूसलाधार बरसि रहल हो। बारह गोट कविता संग्रह, चारि गोट कथा संग्रह, पाँच टा उपन्यास आ अनगणित लेख, निबंध, समीक्षा, पत्र–पत्रिकामे छिड़िआयल अछि।

प्रस्तावनाः
हिनक पाँच गोट उपन्यास प्रकाशित छनि यथा– ''दू कुहेसक बाट'', ''पीयर गुलाब छल'', ''नहि कतहु नहि'', ''पनिपत'' आ ''अग्निबान''। हिनक उपन्यास सभ एकटा नव क्षितिजकें उद्घाटन करैत अछि। जाहिमे कथा तत्वक तँ प्रधानता अछिए, संगहि सूक्ष्म मनोविश्लेषण, अन्तः संघर्ष आ चरित्र निर्माणक यथार्थ चित्र पर विस्तारसँ प्रकाश देल गेल अछि। ई समाजक ज्वलंत मुद्दाकें अपन उपन्यासक विषय–वस्तु बनबैत छलाह। हिनक– उपन्यास मध्य औद्योगिकरणक परिणामस्वरूप व्यक्तिक निर्वासित भ' जयबाक पीड़ा स्पष्ट रूपें परिलक्षित होइत अछि। सत्ताक दुरभिसंधिमे टुटल–थकुचल लोकक कुंठा हुनका अपना दिस आकृष्ट करैत छल। जीवकान्तकें गरीबीक अनुभव छल आ ई अनुभव हुनक उपन्यास मध्य स्पष्टरूपें दृष्टिगत होइत छल। यथास्थितिकें तोड़बाक लेल व्यक्तिक एकान्तिक संघर्ष आ ओहि मध्य व्यक्तिक टूट हुनका लेल बेशी कष्टकर छल। व्यक्तिक जीवनमे पसरल अवसाद ओ शून्यता, पारिवारिक जीवनक विपन्नता आदि सामायिक चिन्तन जीवकान्तक उपन्यासकार जुड़ रहल अछि आ तकर मुखर अभिव्यक्ति द' मैथिली उपन्यासकें एकटा नव आयाम प्रदान कयलक।

एतय हम हिनक ''अग्निबान'' उपन्यासक चर्चा करब जे मिथिला मिहिरमे धारावाहिक रूपमे छपि रहल छल। ''अग्निबान'' उपन्यासमे कोनो नायक–नायिकाक प्रेम–विरह अथवा जीवन–संघर्ष नहि देखाओल गेल अछि। ने कोनो वर्ग–संघर्ष अछि, ने कोनो सामाजिक अथवा राजनीतिक आन्दोलन अछि। उपन्यासक नायक कही वा केन्द्र कही, थिक एकटा गाम। ई मिथिलाक कोनो गाम भऽ सकैत अछि। ई रिपोर्ताज शैलीमे लिखल गेल उपन्यास अछि जाहिमे एकटा गाम अगिलग्गीमे जरैत अछि। भूख आ विपन्नतासँ दम घुटैत संस्कार जरैत अछि। एहि उपन्यास मध्य पलायन करैत पुरुख आ उतराचौरी करैत महिला बेर–बेर धाह स' पकैत अछि आ पोखरिमे मूड़ी नुकबैत अछि। एहि उपन्यासक प्रसंग दुर्गानाथ झा श्रीशक कहब छनि–

''अग्निबान जीवकान्तक सशक्त लघु–उपन्यास थिक जाहि मध्य ओ ग्राम्य–जीवनक सम्पन्नता ओ विपन्नता दुहू पक्षक चित्रण कए ओहि मध्य भोगैत जीवनक अन्तरंगकें अपन सजीव शैलीमे उद्घाटित कएल अछि।''[1]

जीवकान्त गामक बहिरंग ओ अन्तरंग स्वरूपकें निकट सऽ देखलनि ओ भोगलनि अछि आ तें गामक चरित्र, ओकर आभ्यन्तरिक गतिविधिक तथ्यात्मक विवरण देबामे ओ पूर्णरूपेण सफल भ' सकलाह अछि। ओना एहि उपन्यास मध्य बहुत टा रोचक पात्र सभ अछि। ताहिमे स' मुख्य पात्र कुन्तीमाय आ उपमाक माय थिक। ई दुनू एकाकी भय आ भूखक जीवनक सत्यकें अगिलग्गी आ अग्निबानमे अनुभव करैत छथि। कुन्ती माय जतय एक बाटी बसिया भात लए कलपर पतिज्ञा करैत घोर चिन्तनमे डुबल ''किएक ने अबैत छथि काकी?'' जे एकसर भूख आ अभाव स' लड़ैत पतिक अनुपस्थितिमे पैच उधार कए अपन आ बच्चा सभक जीवन रक्षा करैत अछि एतय हम कुन्तीमायक माध्यम सऽ मिथिलाक तत्कालीन समाजक बदलैत स्वरूप, ओकर छहोछित होइत संस्कारक विभत्स रूप प्रस्तुत करैत छी–

''ओना ओ जनैत छलि जे ओकरा पैंच–पालट क्यों ने देतैक। एतेकटा गाममे ओकरा उपाससँ ककरो चिन्ता नहि होयतैक। क्यो द्रवित किए होतय? तथापि निराशामे सँ कोनो स्वर थकुचल साँप जकाँ अपन फन तानि दैत छल जे चल तँ.... आ जँ क्यो आधो सेर चाउडर पैंच दऽ देलकौ.... चल, चल, चल.... गै कुन्तीमाय, चल''(2)

मुदा ओकर अनुमान सही रहै। ककरो हृदयमे कनिको विवेक नहि भेल। ओ सबसऽ कहलक–हिनके भरोसे पर आँच अदहन कऽ अयलिऐक अछि, देथुन। बिथुत जुनि करथु। ई उपन्यास कुन्तीमायक भूख, ओकरा सेरो भरी अन्न लेल खेखनबाक तेहन विराट चित्रण करैत अछि, जकर आगाँ मुंशी प्रेमचंदक 'कफन' सेहो झुझुआन बुझाइत अछि। एम्हर पसाही टाटमे ध' लेने छलैक। ललका साँप जीह लप–लप करैत उपर मुँहे चढ़ैत गेल।

एम्हर दोसर दिस उपमाक माय सपना एकाकी जीवन जीबाक लेल विवश कयल जाइत अछि। अपन झूठक आन–बान–शान के बचबै लेल। पाँच बीघा खेत, एकटा गाम, एकटा समाज, संस्कृति जीवन दर्शन कें बचबै लेल। ओ बेर–बेर प्रतिवाद करैत अछि मुदा ओकर सभ्यता–संस्कृति कें डर देखाकऽ चुप कराओल जाइत अछि। जीवकान्त कहियो बाजल छलाह–

''हम सब घरमे हिंसक होइत छी आ बाहर अहिंसक। पत्नीकें एकसर सामाजिक आ पारिवारिक यंत्रणामे छोड़ि, हमसभ परदेश पलायन करैत छी। हमहूँ एकटा उदाहरण छी।''(3)

से ठीके। एतय उपमाक माय आ कुन्तीमाय दुनू गोटे अभावसँ ग्रस्त एकाकी जीवन जीबाक लेल मजबूर अछि। सपना सन एकाकी महिला जे भरि–भरि राति सूतल बेटीक बहन्ने केबाड़ ढकढ़काबैत चोरकें हे हे... धर धर... करैत अछि। एतय ओकर मानवीय अधिकारकें दोहन कयल जाइत अछि, ओकरा अपन घरक चौकीदार बना कऽ राखल जाइत अछि। अगिलग्गीक उपरांत जतय सभ केओ निराश आ हताश अछि ओतए सपनाक मनः स्थिति किछु आर अछि–

''ओकरा गुदगुदी लगलैक– ई घर जरि जयतैक। ओकर ओगरबाही छुटि जयतैक। एतेक दिन ओकरे अनिर्णयसँ ओकरा एकान्तवासक दण्ड भोगऽ पड़ैत छलैक। एकटा संस्कृतिक अध्याय समाप्त होइत छैक, एकटा संस्कृतिक अध्याय शुरू होइत छैक। परिवर्तनक क्रिया क्रूर तँ होइते छैक। मुदा, नीक होइत छैक।''(4)

एहि उपन्यास मध्य सबसँ रोचक पात्र आदि निरधन जे एकसरे सौंसे गामक माध्यमे अष्टायामक संकल्पकें टेकने अछि 'जय सिताराम, जय सिताराम।' आगिक बुलडोजर सौंसे गामकें धँगैत चल गेल। मुदा निरधन भगवानक झरकलहा फोटो ल' क' अष्टयाम करैत रहल।

निष्कर्षतः 'अग्निबान' मे एकटा गामक चित्रण अछि, जकर पूरा सिस्टम ध्वस्त अछि, जे भग्न अछि, जे अपन अन्तर्विरोधक कारण एहिना जरैत रहत। एतय सभ ठाम देखावा पसरल अछि। अपनाकें नीक आ दोसराकें बेजाय बनबामें सौंसे गाम लागल अछि। निरधन अष्टायाममे सक्रिय अछि मंडप बनब' सँ ल' क' धूप–आरती धरि मुदा भक्तिक कारण नहि अपितु पेटक ब्योंतमे। बच्चाबाबू अष्टयामक बेहरी ओसुलिक' घरमे दाबि दैत छथि। कुन्तीमाय बेटी संगे भुखले जरैत गामकें छोड़ि पड़ाइत अछि। एहि गाममे उत्साहक अभाव अछि, फरेब अछि, संवेदनहीनता अछि। संस्कार जड़ भऽ गेल अछि। एहि उपन्यासक सभ पात्र छद्मक–युद्ध दिस प्रवृत अछि जेना जीवन कोनो रंगमंच हो।एतय गामक प्रकृति नष्ट अछि तें गामक जरब संस्कृतिक जरब अछि। ई कोनो प्राकृतिक आपदा नहि थिक। ई थिक मनुक्खक लोभ, लालसाक परिणाम आ तें गामक जरब जेना ओकर नियति थिक।

संदर्भ–सूचीः

1. मैथिली साहित्यक इतिहास– ले. दुर्गानाथ झा श्रीश, प्रकाशक– मिथिला पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, पृ.– 354
2. जेना कोनो गाम होइत अछि, संकलन आ संपादन– प्रदीप बिहारी, प्रकाशक– चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, पृ.– 364
3. अधरतियाक चान– ले. गंगानाथ गंगेश, प्रकाशक– मैथिली लोक रंग प्रकाशन, दिल्ली, पृ.– 58
4. जेना कोनो गाम होइत अछि, संकलन आ संपादन– प्रदीप बिहारी, प्रकाशक– चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, पृ.– 361